तेवरी-पक्ष

[जन-जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी]

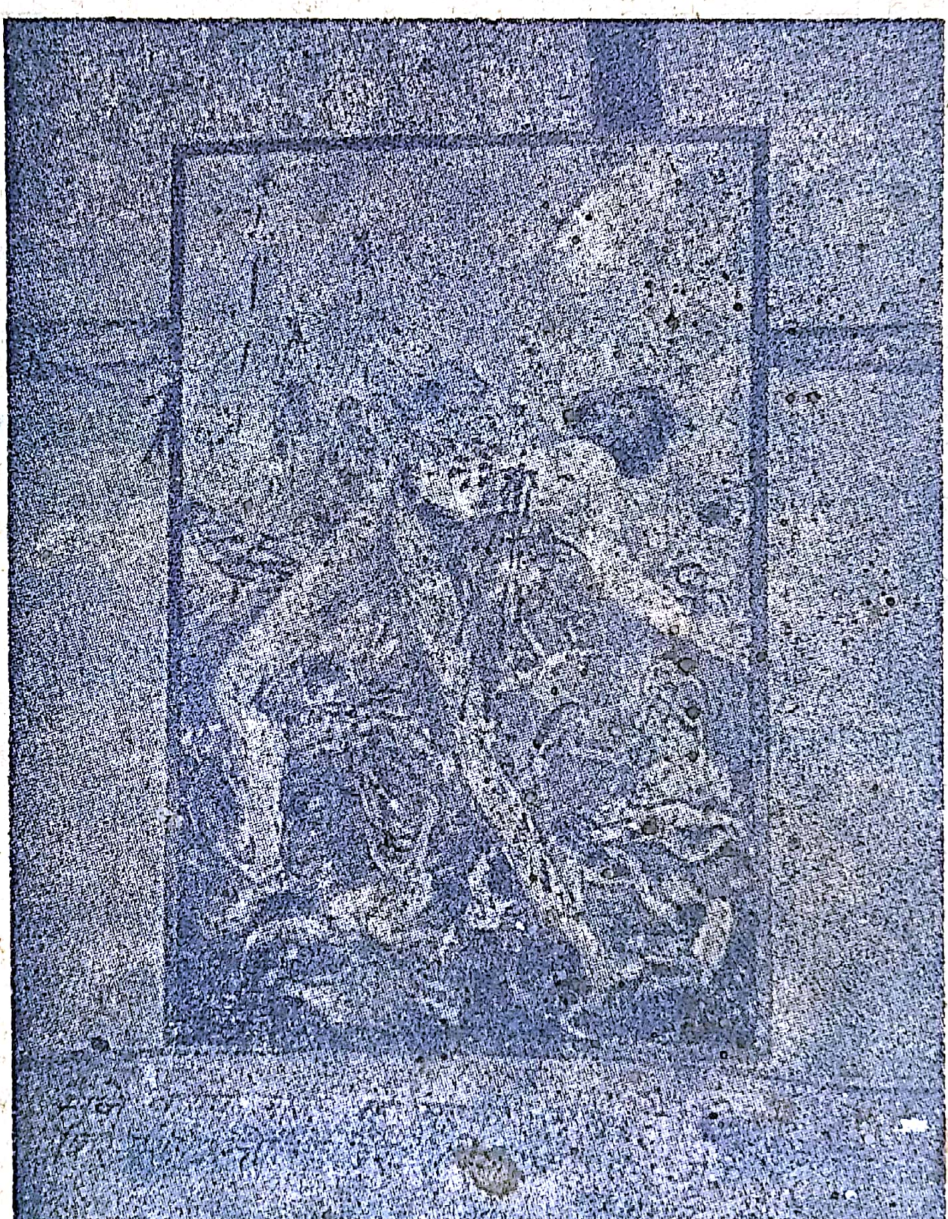

Scanned by CamScanner

तेवरी-पक्ष

(जन-जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी)

वर्ष–छः अंक–एक जन० फर० मार्च–१९८

संरक्षक–श्री रामचरन गुप्ता

सम्पादक–रमेशराज

सह सम्पादक–सुरेश त्रस्त

योगेन्द्र शर्मा

विजयपाल सिंह

रामगोपाल शर्मा 'गोपेश'

मूल्य–एक प्रति, तीन रुपया

वार्षिक–दस रुपया

सम्पादन/संचालन-अवैतनिक

पत्रिका परिवा

सर्व श्री श्याम बेबर

दर्शन बेजा

कुमार अशोक

गजेन्द्र बेबस

वीरेन्द्रकुमार सिंह

देशबन्धु अग्रवाल

ब्रह्मदेव शर्मा देव

अनिल कुमार अनल

सम्पर्क–सार्थक-सृजन प्रकाशन

१५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़–२०२००१

—समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र अलीगढ़।

Scanned by CamScanner

मंच

आज हिन्दी गीति-विधा एक विशेष प्रकार की तकनीकीय व्यवस्था के अन्तर्गत उभर रही है, जो सतही तौर पर देखने पर गजल की तकनीकीय व्यवस्था के काफी निकट या उसकी नकल जैसी महसूस होती है। इसी कारण कुछ साहित्यकारों ने मात्र इस तकनीकीय व्यवस्था को ही दृष्टिगत रखते हुए इसे गजल नाम देने की अथक कोशिश की है।

जबकि गजल जैसी तकनीकीय व्यवस्था से हमारा रीतिकालीन काव्य भरा पड़ा है। केशव, घनानन्द, मतिराम, देव, पदमाकर, ठाकुर, बोधा तथा आधुनिक ब्रजकाव्य के प्रमुख कवि रत्नाकर एवं सत्यनारायण कवि रत्न आदि का सवैया, घनाक्षरी आदि छन्दों में लिखा गया काव्य इसका ज्वलन्त प्रमाण है। ठीक इसी प्रकार की तकनीकीय व्यवस्था कबीर में भी मिलती है। लेकिन उक्त काव्य को किसी भी कवि ने गजल विधा के अन्तर्गत रखने की कोशिश नहीं की और न बाद में समीक्षकों आदि ने इसे गजल की श्रेणी में रखा। कारण स्पष्ट हैं कि- मात्र तकनीकीय व्यवस्था के ही आधार पर कोई भी विधा मान्य नहीं हो सकती।

लेकिन आज हिन्दी काव्य में गजल के अधकचरे अन्धानुकरण का परिणाम यह है कि गजल के कथ्य एवं शिल्प की विशेषताओं को अनदेखा कर, मात्र उसकी तकनीकी को अपनाकर, उसे गजल संज्ञा से विभूषित किया जाने लगा है। वर्तमान समय में हिन्दी में लिखी जाने वाली कथित गजलें या हिन्दी गजलें, गजल की एक तकनीकीय व्यवस्था (रदीफ–काफिया) अर्थात् अन्त्यानुप्रास को छोड़कर, गजल की अन्य शर्तों (प्रेमिका से प्रमपूर्ण बातचीत एवं बहरों, शेरों की निश्चित संख्या एवं उसके निश्चित तुका-तक्रमादि) को पूरा करने में अधिकाँशतः अक्षम प्रतीत होती हैं। कथित गजल या हिन्दी गजल के पितामह दुष्यंत कुमार इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं।

गजल की कथनभंगिमा एवं उसकी शिल्पीय व्यवस्था चूकि प्रेमिका

Scanned by CamScanner

से प्रेमपूर्ण बातचीत के संदर्भ में ही प्रसंगानुकूल रही है अथवा अब भी है तथा उसकी काफिये सम्बन्धी तकनीकीय व्यवस्था का आधार, स्वर के आधार पर है, जबकि हिन्दी में तुकान्त व्यवस्था स्वर एवं व्यंजन के संयुक्त प्रयोग के आधार पर रही है, तब प्रश्न यह उठा कि जो रचनाएँ गजल की उक्त विशेषताओं को पूरा ही नहीं करतीं, ऐसी रचनाओं को गजल कैसे माना जाय ? तथा जो रचनाएँ प्रेमिका से प्रेमपूर्ण बातचीत करने के बजाय वर्तमान त्रासदियों की अभिव्यक्ति हैं, जिनकी कथन भंगिमाओं में साकी, शराब, मयखाना, इश्कियाँ महफिलों के बजाय युद्ध भूमि में चमकती तलवारों की खनखनाहट है, सरफरोशाने–वतन का जिक्र है, जोश है, आक्रोश है ललकार है, असहाय और पीड़ित जन की चीत्कार है, ऐसी रचनाओं को क्या कहा जाय ? ऐसे ढेर सारे प्रश्नों के उत्तर स्वरूप 'तेवरी' की स्थापना हुई है।

तेवरी एक निश्चित अन्त्यानुप्रासिक व्यवस्था के अन्तर्गत लिखी जाने वाली ऐसी कथन–भंगिमा का नाम है, जो हमारे सुख-दुख, चिन्ता आदि अर्थात् सामाजिक सरोकारों की सत्यपरक एवं यथार्थ परक अभिव्यक्ति हैं।

चूँकि एक निश्चित तकनीकीय व्यवस्था के अन्तर्गत लिखी जाने वाली इन रचनाओं की कथन-भंगिमा, गजल की कथन भंगिमा से एकदम विपरीत है तथा उक्त अन्त्यानुप्रासिक व्यवस्था में कथन–भंगिमा बदलते ही उसका शिल्प (रस, छंद, अलंकार, भाषा-प्रयोग, मुहावरे, प्रतीक, मिथक, उपमान, आदि) में आमूल परिवर्तन आ गया है, साथ ही काफिये जैसी तुकान्त व्यवस्था, स्वर के बजाय, स्वर और व्यंजनों के संयुक्त प्रयोगों में बदल गयी है (यह हिन्दी काव्य के प्रभाव के कारण हुआ है)। ऐसे में ऐसी रचनाओं को गजलें कहने या मानने वाले क्या मात्र गजल शब्द का अन्धानुकरण नहीं कर रहे हैं ? अतः यह कहना अनुचित न होगा कि आज हिन्दी गीति काव्य गजल-मुखी नहीं, तेवरी मुखी है। हिन्दी गीति विधा के तेवरीकारों के अतिरिक्त जहीर कुरैशी, सूर्यभानु गुप्त, मधुर नज्मी, शिव ओम अम्बर, बशीर अहमद मयूख, माहेश्वर तिवारी, कुँवर बेचैन, धनंजय सिंह, डा० रवीन्द्र भ्रमर, गोपालदास नीरज, डा० वेदप्रकाश अमिताभ, रामदरस मिश्र, ज्ञान प्रकाश विवेक जैसे कथित गजलगो भी आज गजलें नहीं तेवरियाँ लिख रहे हैं। भले ही वे इन सत्योन्मुखी, यथार्थोन्मुखी रचनाओं को 'तेवरी' नाम न दें।

रमेशराज

तेवरीपक्ष–10 ... पृ० 2

Scanned by CamScanner

तेवरी-पक्ष

पाठकीय

अलीगढ़

आपने यह आन्दोलन उठाकर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है।

—राम विलासशर्मा, इन्दौर

सम्पादकीय की साहसिकता एवं स्पष्टता अच्छी लगी। धीरेन्द्र शर्मा की कविता अपनी भाषा-शैली और चोट-कचोट में खरी उतरती है। राजवीर त्यागी की रचना ...... सुरेश त्रस्त की आलोचना दृष्टि, काफी जुझारू है। बस यह धार बनी रहे। —रमेश रंजक, दिल्ली

हिन्दी गजल मुझे भी कभी समझ में नहीं आयी। उर्दू गजल को हिन्दी में लाकर नये कवियों ने बहुत अहित किया है। इस विधा को तेवरी के रूप में ही यदि नया ढाँचा देकर प्रतिष्ठित किया जाय तो हर्ज नहीं है, पर शर्त यह है कि हिन्दी कवि पहले हिन्दी कविता को समझे। होता यह है कि तुकबन्दी करने वा ग हर कोई, कवि होकर, बेतरही गजलें कहकर गजलगो बन जाता है। इधर बहुत सतर्क रहना होगा। —डा० रंजन जैदी, दिल्ली

नये तेवर की रचना को अपने मौलिक स्वरूप में पाठकों के समक्ष हाजिर कर देना महत्वपूर्ण घटना है। डा० परमलाल गुप्त की समीक्षा 'हिन्दी काव्य में तेवरी' तेवरी समूह के संघर्ष और सिद्धान्त दर्शन का विश्लेषण करने में पूर्णतः समर्थ है। विरोध का न जन्मना, उसके मृत होने का पर्याय है। इस दृष्टि से तेवरी भाग्यशाली नि ली।

— डॉ० यज्ञ प्रसाद तिवारी, अनूपपुर

तेवरी-पक्ष अपने तेवर बरकरार रखे हुए है।

—अमृतलाल मदान, कैथल

बारह जीवंत और अद्वितीय तेवरियाँ पढ़कर में हतप्रभ रह गया।

—जयनन्दन, जमशेदपुर

आज किसी भी विधा में प्रतिरोध का तेवर ही काम का सिद्ध होगा और यह रचनाओं में मौजूद है। —छेदीलाल गुप्त, कलकत्ता

'तेवरी' एक स्वतंत्र एवं सत्योन्मुखी साहित्यिक विधा है, सम्पादक महोदय का यह विचार, निराधार नहीं। —डॉ० स्वर्णकिरण, सोहसराय

Scanned by CamScanner

पत्रिका 'सतसैया के दोहरे' के समान, आम मनुष्य की पीड़ा का शब्द-बिम्ब, जीवन की सतीक अभिव्यक्ति है। इससे ज्यादा और तेवरीपन क्या होगा ?

—माणिक मृगेश, मथुरा

कविताएँ तो लिखी हैं मैंने, लेकिन तेवरी नहीं, शायद तेवरी-पक्ष पढ़कर लेखनी के तेवर बदल जांयें, कृपया एक प्रति जरूर भेजें।

—हीरालाल नागर, ५६, ए०पी०ओ०

इस त्रैमासिक में तेवरियों को पढ़ने के बाद कहा जा सकता है कि इनमें भाव एवं कला पक्ष का सावधानी से निर्वाह किया गया है।

— देवेन्द्र गौतम, गिरिडीह

कार्य स्तुत्य है। — बाबूराम वर्मा, देहरादून

तेवरी का विरोध, इसकी अस्मिता को और सुदृढ़ कर गया है। सतीशराठी की लघुकथा, त्रस्त, प्रसून की तेवरियाँ प्रभावशाली।

—रामेश्वर काम्बोज हिमाँशु, बरेली

पत्रिका से प्रभावित हुआ। —मुकेश शर्मा, रेवाड़ी

सम्पादकीय अच्छी और धीरेन्द्र शर्मा की कविता उससे भी अच्छी।

—वीरेन्द्र मोहन, सागर

मंच पढ़कर ज्ञात हुआ कि किसी भी सही बात को मनवाना कितना कठिन कार्य है। —राजकुमार पांचाल, दिल्ली

पुस्तकों की इस तरह की गयी समीक्षा का तात्पर्य क्या है ?

—रमेश श्रीवास्तव, गया

आप तेवरी पर सर्वोत्तम कार्य कर रहे हैं।

—तुलसी नीलकंठ, मु० न०

विविध सामग्री से अंक और सार्थक। —मदन अरोरा, गंगा नगर

आप सभी निरन्तर सार्थकसृजन में लगे रहें।

—योगेन्द्र मोदगिल, पानीपत

आपके आन्दोलन के प्रति आस्था रखते हुए भी, ऐसा नहीं लगता कि इस कच्ची जमीन पर इमारत खड़ी की जा सकेगी ? एक ही विधा की रचना कहीं गजल तो कहीं तेवरी शीर्षक से प्रकाशित होने का क्या कारण है ?

—सिद्धेश्वर, पटना

समीक्षाएँ बेहद स्तरीय। — माँघी लाल यादव, पंडरिया

'शासकीय' पत्रिका का प्राण। हिन्दी काव्य में तेवरी, तेवरी आन्दोलन का चित्र। —सीताराम शेरपुरी, समस्तीपुर

संपादकीय सार्थक धीरेन्द्र शर्मा की कविता धारदार। तेवरीकारों की तेवरियों में आक्रोश। —आनन्द बिल्थर, बालाघाट

तेवरीपक्ष -10 पृ० 4

Scanned by CamScanner

यह ज्योति बुझने न पाये

साहित्य, कुव्यवस्था परिवर्तन का एक ऐसा हथियार है, जिसके विचारों की तेज धार आताताई, अत्याचारी, व्यक्तिवादी, और बुर्जुआ वर्ग के उन मूल्यों को गर्दनें कलम करती है, जो मानवीय रागात्मकता के बीच अलगाव, वैमनस्य, शोषण, भेदभाव, साम्प्रदायिकता जैसी रक्त-पिशाची परम्पराओं/परिस्थितियों की जड़ मजबूत करते हैं।

कुव्यवस्था को ललकारने, चुनौती देने, जूझने और संघर्ष करने में साहित्यकार, हर युग में, अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। अपनी साँस्कृतिक मूल्यवत्ता, सामाजिक भाईचारे को बचाने और अपसंस्कृति को नेस्तनाबूद करने में उसे यदि प्राणों का उत्सर्ग करना पड़ा है, तो उसने हँस-हँस कर और पूरे जोश-खरोश के साथ यह भी किया है। अमर शहीद भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखाँन जैसे चिन्तकों विचारकों की शहादत का ही परिणाम है कि आज का साहित्यकार भी दासता, शोषण और अत्याचार के विरोध में आवश्यकया पड़ने पर अपने प्राणों को आहुति देने में पीछे नहीं हटता।

इस संदर्भ में पिछले दिनों पंजाबी कवि पाश और सफदर हाशमी की साम्प्रदायिक एवं सत्ता के गुण्डों द्वारा की गयी हत्या, यह सोचने पर फिर मजबूर कर रही है कि हमें अपने राष्ट्र पर गहराते संकटों का सामना करने के लिये सामाजिक क्रान्ति के वैचारिक संघर्ष को और तेज करना है। और यदि आवश्यकता पड़े तो पाश और सफदर हाशमी की तरह अपने वतन पर जान भी न्यौछावर कर देनी है। हमारी इन शहीदों की प्रति यही सच्ची शोक-संवेदना और श्रद्धांजलि होगी।

एक निष्ठा, एक ईमानदारी से सामाजिक-क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार करने वाले 'जनसंस्कृति मंच' के गठन के समय से ही मैं इस मच से जुड़ा रहा। दिल्ली इलाहाबाद, लखनऊ आदि में हुए इस मंच के अधिवेशनों में जिस व्यक्तित्व ने मुझे बेहद प्रभावित किया, वह व्यक्तित्व क्रान्तिकारी कवि गौरख पाण्डेय का था। लेकिन जब मैंने अखबारों में यह पढ़ा कि श्री गोरख पांडेय ने अपनी बीमारी से तग आकर आत्महत्या करली है, तो मुझे सहसा विश्वास न हो सका और सोचने लगा कि जो कवि अपनी कविताओं में हम सबको विपरीत से विपरीत परिस्थिति में संघर्षित रहने की प्रेरणा देता है, वह आत्महत्या कैसे कर सकता है? श्री गौरख पांडेय ने अपने जीवनकाल में लोकतांत्रिक मूल्यों की जो ज्योति प्रज्जवलित की है, आज हर साहित्यकार का यह दायित्व बन जाता है कि यह ज्योति बुझने न पाये।

—रमेशराज

तेवरीपक्ष-10 पृ०5

Scanned by CamScanner

मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्यकार सम्मेलन की विधिवत् स्थापना

जबलपुर–बहुप्रतीक्षित 'मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्यकार सम्मेलन' की विधिवत् स्थापना हो गई। वह राज्य स्तर की 'मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के समकक्ष साहित्यक एवं सांस्कृतिक विकास का लक्ष्य रखने वाली संस्था होगी। जिसमें राज्यभर के प्रमुख साहित्यकारों का प्रतिनिधित्व हैं। इसकी अस्थायी कार्य समिति एवं संस्थापक सदस्यों की सूची इस प्रकार है–

कालिका प्रसाद दीक्षित "कुसुमाकर जबलपुर, सं० रा० धरणीधर छिंदवाड़ा, डा० राममूर्ति त्रिपाठी उज्जैन निरंजन जमींदार इन्दौर, डा० चन्द्रप्रकाश वर्मा भोपाल, ब्योहार राजेन्द्र सिंह जबलपुर, डा० लक्ष्मण सहाय ग्वालियर सलाहकार मण्डल, विश्वम्भर दयाल अग्रवाल भोपाल अध्यक्ष, डा० परमलाल गुप्त सतना कार्यकारी अध्यक्ष, वटुक चतुर्वेदी भोपाल, डा० रामनारायण सिंह 'मधुकर' सिवनी उपाध्यक्ष सूर्यकान्त नागर इन्दौर (महामन्त्री) डा० कृष्ण कमलेश भोपाल प्रबंधमन्त्री, लेखराम चिले 'निशक' बालाघाट संगठनमन्त्री, प्रो० विजय श्रीवास्तव सतना लेखामन्त्री, डा० यज्ञप्रसाद तिवारी अनूपपुर साहित्यमन्त्री, रम्मू श्रीवास्तव जबलपुर प्रचारमन्त्री, प्रो० आदित्य प्रताप सिंह रीवा योजनामन्त्री, प्रभाकर रूसिया जबलपुर विधिमन्त्री, गुणसागर सत्यार्थी टीकमगढ़ संस्कृतिमन्त्री, डा० गोकर्णनाथ शुक्ल जबलपुर, हीरालाल गुप्त जबलपुर, डी० सी० मिश्र सिहोरा मिश्रीलाल जयसवाल कटनी, डा० ए० एल० सोनी मझौली, नारायण प्रसाद सोनी सिवनी, अरविन्द मानव सिवनी, तुलसीराम त्रिपाठी नरसिंहपुर, आनंद बिल्थरे बालाघाट, उपेन्द्र जोशी बालाघाट, सुरेश उपाध्याय होशंगाबाद, डा० सतीश दुबे इन्दौर, विक्रम सोनी इन्दौर, पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी उज्जैन, निशाव्यास भोपाल, डा० विद्युलता गोस्वामी भोपाल, श्यामकुमार 'श्याम' खरगौन, डा० लक्ष्मी नारायण शोभन गुना, पूरन निर्दोष परासिया छिंदवाड़ा, डा० कृष्ण अग्निहोत्री खण्डवा, प्रो० वी० एल० आच्छा पेटलाबाद झाबुआ, डा० इसाक अश्क शुजालपुर मण्डी शाजापुर, सुरेश मिश्र मंडला, गिरजा शंकर अग्रवाल मण्डला, बाबूलाल जैन 'जलज' अम्बिकापुर, डा० विनयकुमार पाठक बिलासपुर, डा० मृणालिका झा रायपुर, विश्वेश्वर दुर्ग, रमेश शर्मा भिलाई–दुर्ग, श्रीमती जानकी शर्मा भिलाई–दुर्ग, बाबूलाल शर्मा सारंगपुर–राजगढ़, दिनेशचन्द्रदुबे शिवपुरी, चुन्नीलाल सलूजा शिवपुरी, राज गोस्वामी

Scanned by CamScanner

दतिया, बाबूलाल गोस्वामी दतिया, डा० जमुना प्रसाद बड़ेरिया डबरा-ग्वालियर, डा० महेशचन्द्र पाण्डेय अम्बाह-मुरैना, डा० शिवशंकर कटारे भिण्ड, कौशलकिशोर भट्ट टीकमगढ़, श्रीमती शिवकली रूसिया टीकमगढ़, टिवरी आर सी आलोक पन्ना, कु० वर्षासिंह पन्ना, पारसनाथ पाण्डेय सतना, श्रीमती त्रिवेणी गुप्ता सतना, डा० कैलाश तिवारी रीवा, नलिनीश रीवा, श्रीनिवास शुक्ल 'सरस' सीधी, गोपालदास भटनागर शहडोल, डा० रामलखन गुप्त अनूपपुर डा० लक्ष्मीनारायण भोपाल, डा० कृष्णानाग जबलपुर, डा० राजेन्द्रकुमार शर्मा इन्दौर, वेदप्रकाश सिंह सतना, डा० सुरेन्द्रकुमार राय कैमोर, गोपालदास अग्रवाल विलासपुर, महेशकुमार मिश्र 'मधुकर' दतिया मनमोहन मदारिया भोपाल, प्रो० सुधा तिवारी सतना, डा० वी० के० दुबे छिंदवाड़ा, कु० इंदु बाला मिश्र जबलपुर, श्यामनन्दन मिश्र कटनी, डा० शकुन्तला चतुर्वेदी कटनी, राजेन्द्रप्रसाद तिवारी जबलपुर।

इन सदस्यों के अतिरिक्त सम्मेलन के नियमों में आस्था रखने वाले और सदस्य बन सकेंगे। प्रारम्भ में संस्थापक सदस्यता शुल्क सौ रुपये और साधारण सदस्यता शुल्क पच्चीस रुपये रखा गया है, और इसकी शासन द्वारा विधिवत् रजिस्ट्रेशन की कार्यवाही की जा रही है। ज्ञातव्य है कि पहले अक्टूबर, ८५ में सतना में इस उद्देश्य से सम्मेलन बुलाया गया था। सबकी सहमति पर फिर जबलपुर में कार्यसमिति का गठन किया गया। इसका अस्थायी कार्यालय अन्य यवस्था होने तक सराफा चौराहा, जबलपुर में रहेगा। कार्यसमिति के सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपने जिलों की इकाइयों का गठन करें और सूचना कार्यकारी अध्यक्ष को शीघ्र भेजें, साथ में सदस्यता शुल्क भी।

—डॉ० परमलाल गुप्त
— एस एच ६, गोपाल कॉलोनी, शास्त्री नगर सतना (म. प्र.)

दर्शन बेजार के सम्मान में कविता गोष्ठी सम्पन्न

बंबई। पिछले दिनों 'सुमन लिपी" ने झाँसी से पधारे अपने साहित्यिक परिवार के सदस्य दर्शन "बेजार" के सम्मान में एक कवि गोष्ठी का आयोजन प्रसिद्ध लेखिका मालिनी बिसेन की अध्यक्षता में किया।

अशिवनी कुमार जोशी की सरस्वती वंदना के बाद गोष्ठी की शुरूआत देवमणि पाण्डेय की गजल से हुई :-

हो कैसा भी अँधेरा अब न खौफ खाइए।
है दिल में अगर आग तो उसको जलाइए।

Scanned by CamScanner

कवि बादल से कुछ हास्य व्यंग्य रचनाएं सुनाकर श्रोताओं को खूब हंसाया :–

कभी लंहगे ने लूटा है/कभी टोपी ने मारा है।

शैलेश कुमार सिंह की छोटी व्यंग्य रचनाओं ने काफी गुदगुदाया।

गीतकार हरिश्चंद्र के भजन को श्रोताओं ने मुग्धभाव मे सुना :–

दुख से मत घबराना पंछी/यह जग दुख का मेला है।

हरिश्चंद्र का भोजपुरी गीत भी लोगों को बहुत पसन्द आया :—

निमवा क गछिया सइंया धनी-धनो, छइंया हो।
रोज दुपहरिया बितइयों यहो ठइंया हो ।।

डा० सुशोला गुप्ता के पैने व्यंग्यों ने श्रोताओं को काफी कुछ सोचने को बाध्य किया :–

लोगों के असली चेहरे/मुखोटों के बीच पहचाने नहीं जाते।

श्रीमती जैतून ने 'अमरीका दर्शन" कविता सुनाकर काफी वाहवाही लूटी :—

अपने वतन को भुलाते चले हैं/अमरीका दिल में बसाते चले हैं।

श्रीमती मालिनी बिरोन की कविताएं लोगों को अपने बहुत करीब लगीं :––

चलने लगे हैं आज तो हम भी हवा के साथ
बदले नहीं हैं दोस्तो थोड़ा सँभल गये।

झाँसी से पधारे अतिथि कवि दर्शन बेजार की "तेवरियाँ" श्रोताओं द्वारा काफी सराही गई। बेजार ने अपनी रचनाओं में राजनीतिक विकृतियों और सामाजिक विषमताओं का अच्छा चित्र प्रस्तुत किया :––

अब दीया काला धुआँ देने लगा है/हर तरफ की रोशनी लेने लगा है।
क्या अजब माहौल है इस मुल्क में/नाव उलटी नाखुदा खेने लगा है ।।

* * *

कहर सब पर ढा गई यूँ बिजलियाँ/बर्फ से भी जल रही हैं उगलियां।
भूख की ऐसी फसल घर–घर उगी/पेट को छूने लगी हैं पसलियाँ ।।

कवि गोष्ठी का संचालन अश्विनी कुमार जोशी ने किया तथा अन्त में जीतसिंह चौहान ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुतिः देवमणि पाण्डेय

तेवरीपक्ष–10 पृ०8

Scanned by CamScanner

तेवरियां

(एक)

आदमी जब खून में डूबा हुआ है
पूछते हो हादसा ये क्या हुआ है ?
झुर्रियाँ चेहरे की नक्शा बन गई हैं
जिसपे हिन्दुस्तान बस लिक्खा हुआ है
लिख रहा है कटे हाथों से गजल
जिन्दगी का आइना देखा हुआ है ?

(दो)

कुछ न कुछ तो है हकीकत इस कहानी में
दोस्ती होने लगी है आग पानी में
मानचित्रों में नजर आती है हरियाली
योजना दम तोड़ देती हैं जवानी में
कुएँ सूखे, खेत सूखे, आदमी भूखे
और बारिश हो रही है राजधानी में

– जगदीश श्रीवास्तव

(तीन)

गुनाहों का धुँदलका छा चुका है चार सू अब के
कहाँ जायेगा इस अन्धे नगर में बच के तू अब के ?
हमारा घर कई टुकड़ों में बँट जाये न ऐ लोगो
अजब दीवार–सी उठने लगी है चार-सू अबके
कहीं ऐसा न हो कि बाद में रोना पड़े तुमको
अगर मुमकिन, सुनो! पहचान लो अपना लहू अबके
कई वर्षों से कुछ जिन्नात जो खामोश बैठे थे,
वही आपस में फिर करने लगे हैं गुफ्तगू अबके
हजारों साल पहले जो महाभारत का आलम था
वही फिर सामने आने लगा है हू-ब-हू अबके

– देवेन्द्र गौतम

तेवरीपक्ष–10 पृ० 9

Scanned by CamScanner

हुजूर ! सरकार !! मेरे परवरदिगार !!!
आप की फर्जअदायगी का शुक्रिया
आप की नमक हलाली का खुदाहाफिज
लोग आपको नौकरशाह कहें
अखबार आपको लालफीताशाह कहें
लेकिन आप इस मुल्क के शाह
[बादशाहों के बादशाह]

धन्य है आप की जाति
धन्य है आप की जमात
इसमें सारे शास्त्र समाहित
जनता का अहित, मगर आप का हित
आप एक होकर भी अनेक
अनेक होकर भी एक
[एकोऽहं बहुस्यामि]

यह एरिस्टोक्रेसी बेमिसाल
यह हिपॉक्रेसी, ब्यूरोक्रेसी बेमिसाल
'लोक' फटेहाल
किन्तु 'तन्त्र' माला-माल
देश आपका कर्जदार
आप से चलती सरकार
[अहर्निश सेवामहे]

हे दफ्तरी-संस्कृति के यमराज !
आप क्या नहीं करते ?
आप क्या नहीं हरते ?
आप नियम-नियामक
कानून के पालक [इसीलिए]
आप करप्ट नहीं होते
[सत्यमेव जयते]

हे व्यवस्था के खर-दूषण
देश के अभिजात आभूषण
आप अनन्त, आपका चरित्र अनन्त

तेवरीपक्ष-10 पृ० 10

Scanned by CamScanner

कथा अनन्त, लीला अनन्त
लोक सेवा के भीषण तन्त्र आप
जन-हित के आदिम मन्त्र आप
[आप दैहिक, दैविक, भौतिक ताप]

सत्ता आपसे चले
व्यवस्था आपसे चले
योजना आप, आयोग आप
पुलिस आप, प्रशासन आप
उत्पादन आप, उत्पादकता आप
देश की किस्मत आपकी कहानी
[जिमि जीवहिं माया लिपटानी]

आप अफसर नहीं, सर्वस्व हैं
बस आप का ही वर्चस्व है
आप कोई वर्ग नहीं, एक संस्कृति हैं
आप कर्म नहीं, सम्पूर्ण कृति हैं
रूपातीत, इन्द्रियातीत
आप पर कैसी जोरा-जोरी ?
[ईट, ड्रिंक एण्ड बी मैरी]

हुजूर ! सरकार !! मेरे परवरदिगार !!!
है मैकाले के मानस-पुत्र
सुविधा-भोगी परजीवी
लोकसेवा के प्रतिक्रियावादी फासिस्ट
राजनीति के साम्राज्यवादी मारीचि
शोषकतन्त्र के रक्तबीज
अपसंस्कृति, विकृतिवाद के इलीत
आप जो करें, सो थोड़ा
[मुल्क को कहीं का न छोड़ा]

— धीरेन्द्र शर्मा
५१ श्रीशचन्द्रबसु मार्ग
इलाहाबाद (उ० प्र०) २११००३

तेवरीपक्ष-10 पृ० 11

Scanned by CamScanner

॥ नवगीत ॥

— गिरि मोहन गुरु

पीड़ा होती जा रही है द्रुपद सुता का चीर
चुभते दंश अभाव के ज्यों अर्जुन के तीर
जीतना इनको टेढ़ी खीर

झूँठ–शिखंडी की विजय, सत्य-भीष्म की हार
जीत पहनकर घूमता कौरव का परिवार
महाभारत–सा हाहाकार

महाराष्ट्र सौराष्ट्र क्या आज समूचा राष्ट्र
कुरुक्षेत्र का क्षेत्र है, घर घर में धृतराष्ट्र
दिखे है कैसा रूप विराट

दुर्योधन से हैं धनिक, करते हैं अन्याय
निर्धनता पाँडव हुई सहती है अन्याय
चाहिए श्रीकृष्ण – सा न्याय

— गोस्वामी सेवा आश्रम,
होशंगाबाद (नर्मदापुर)
म० प्र० ४६१००१

क्षणिकाएँ

वैकल्पिक ऊर्जा

ताप ऊर्जा का
वैकल्पिक स्रोत ढूँढ़ना
हमारा धर्म है।
इसीलिए
लूट का बाजार
गर्म है।

उड़ान

एअर इंडिया में
उड़ान का
वातावरण
रहा आला है।
कोई हवाई जहाज,
कोई उसके पुर्जे
उड़ाता है।

–मिश्रीलाल जायसवाल
सुभाष चौक, कटनी (म०प्र०)

तेवरीपक्ष –10

५०१२

सलाह

-ओम ज्योति

प्रिये .....चलो आज पृथ्वीलोक की सैर की जाये, बहुत दिनों से नारद जी ने कोई भी समाचार नहीं सुनाया। महाराज आपने मेरे मुँह की बात छीन ली, चलिये। नारायण.....नारायण.....महाराज की जय हो..... कैसे हो मुनि आपके दर्शन दुर्लभ हो गये, पृथ्वी लोक के क्या हाल है ?

वही पुरानी समस्यायें, बेकारी महँगाई, लूटमार, हत्या, बलात्कार रक्षक द्वारा ही अत्याचार, कुछ तो दया करिये दीनबन्धु .....मानव को इस विपत्ति से बचाइये .....

नारद यह थैली लो और गरीबों में बाँट देना, उनकी परेशानी खत्म हो जायेगी......?

धन्य हो महाराज......पर इसमें क्या है ?

मुनिवर इसमें सताये हुए लोगों के लिए 'सहन शक्ति' है।

संपादक 'रानी माँ'
५४/१४ नार्थ टी टी. नगर, भोपाल–४६२००३

अपनी अपनी दौड़

-आभा गुप्ता

कछुए और खरगोश की प्रसिद्ध दौड़ शुरू हुई। जनता रास्ते पर खड़ी थी, लक्ष्य के पास बहुत सारे पत्रकार जमे हुए थे। अब की बार दिलचस्पी का कारण यह था कि कछुआ एक नेता था, खरगोश आम जनता में से था।

दौड़ समाप्त हुई, कछुआ जीत गया। पत्रकार कागज कलम और कैमरे लिए दौड़े। कछुए से पूछा-कैसे तुम पहले पहुँच सके ? कछुए ने बताया कि मैंने दौड़ से पहले सुना था कि लक्ष्य पर एक कुर्सी रखी है, बस मुझे कुर्सी का ही ध्यान था, मैं लगातार दौड़ता ही गया।

खरगोश से पूछा तुम रास्ते में सो गये थे क्या ? नहीं, उसने सुस्ती और बेदिली से कहा – दौड़ने से पहले मैंने सुना था कि लक्ष्य पर राशन की दुकान है, जिस पर तख्ती लगी है, उस पर लिखा है—

राशन अब अगले महीने मिलेगा।

सी० बी० ३३, रिंग रोड़
नरायना, नयी दिल्ली–२८

समीक्षालय

थोड़े आँसू ढेरों काजल (कविता संग्रह)

कवि–मधुर नज्मी, संस्करण प्रथम नव० ८१

मूल्य– पन्द्रह रुपये पृष्ठ ११२

प्रकाशक :—

जनपद नेहरू स्मृति कवि सम्मेलन समिति
आजमगढ़

कविता हमारे मानवीय मूल्य की एक ऐसी रागात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका रसात्मक बोध करुणा, क्रोध, रौद्रता, जुगुप्सा, वात्सल्य. भक्ति प्रेम चाहे जिस रूप में हो, लेकिन उसके माध्यम से किसी न किसी प्रकार की, किसी न किसी के प्रति रति अवश्य उजागर होती है। हिन्दी के जाने माने कवि मधुर नज्मी के प्रथम कविता संग्रह 'थोड़े आँसू, ढेरों काजल' की कविताएँ पाठक मन को एक नहीं, विभिन्न प्रकार के रसात्मक बोधों से सराबोर करती हैं।

कविताओं का आस्वादन ग्रहण करते समय जब पाठक गंध पूरित पाँखुरियों, गुनगुनी धूप, बूँदों के कंगनों, शवनमी आइनों, पानी की परछाइयों, काजल की रेखाओं, छलकते हुए जामों के बीच अपने आपको एक रोमान्टिक मूड़ में महसूस करता है तो उसके पोर-पोर से इन्द्र धनुषी बिम्ब फूटने लगते हैं, अधरों पर टेसूले गीत उभर आते हैं, नाजुक अहसासों की सुइयाँ उसे चुभन नहीं, गुलाबी गन्ध और रंगों की सौगातें देने लगती हैं–

किस कदर लाजवाब लिक्खा था / शब्द उसने गुलाब लिक्खा था ।।

लेकिन जब पाठक, संग्रह की कविताओं के दूसरे पक्ष की संवेदना ग्रहण करता है तो उसे हरे-भरे जंगल जलते हुए महसूस होने लगते हैं, कत्ल घरों की चीखें सुनाई देती हैं, जिन्दा कबूतरों के जलने की गंध उसे इतना व्यथित कर डालती है कि उसे हर क्षण, हत्याक्षण–सा लगने लगता है। बर्तमान सदी का चेहरा उसे इतना विकृत दीखता है कि कवि की तरह बह भी यातना, शोषण, त्रासदी के विरोध में अपनी चीखों को, कवि की चीख बना डालता है। उसका आत्म, कवि का आत्म हो जाता है और उसे लगता है जैसे कवि के साथ वह भी यह कह उठा है—

आलम धुवाँ-धुवाँ है, चीखें हैं और हम हैं
वहशत में हर बशर को, इस सनसनी से डर है

नवलोपक्ष-10 पृ०-14

Scanned by CamScanner

तेवरी-चर्चा

लेखक–देवराज एवं ऋ० दे० शर्मा देवराज
तेवरी प्रकाशन—शास्त्री निकेतन, पटेल नगर, खतौली
मूल्य–पाँच रुपये, पृष्ठ-अठानबे

तेवरी-विधा के प्रवर्त्तक, संस्थापक, देवराज एवं ऋ० दे० शर्मा देवराज द्वारा सम्पादित तेवरी–चर्चा, तेवरी काव्यान्दोलन के घोषणा पत्र से लेकर तेवरी पर उठे विभिन्न वाद-विवादों एवं उनके समाधानों के क्रम में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें तेवरी की विचारभूमि, रचना-प्रक्रिया, शैली स्वरूप, भावात्मक एवं रसात्मक सत्ता आदि शास्त्रीय पक्षों पर बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ प्रकाश डाला गया है।

'गजल बनाम् तेवरी' शीर्षक से लिखे गये लेख में गजल और तेवरी के बीच उत्पन्न भ्रामक स्थितियों का श्री नीरज, त्रिलोचन शास्त्री, मेघराज मुकुल, नरेन्द्र नाथ आदि के गजल के प्रति दिये गये वक्तव्यों को आधार बनाकर, गजल को एक नितांत कोमल, रोमानी, यौवन, मनोरंजन, और दैहिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति की विधा सिद्ध करते हुए देवराज (द्वै) ने तेवरी की एक स्वतंत्र विधा के रूप में तार्किक व विज्ञानपरक तरफदारी की है।

तेवरी के विधागत अस्तित्व की लड़ाई के संदर्भ में श्री माहेश्वर तिवारी एवं देवराज (द्वै) के बीच हुई 'तेवरी चर्चा' निस्संदेह इस पुस्तक के वे महत्वपूर्ण पन्ने हैं, जिनके आधार पर तेवरी और गजल को अलग-अलग करके देखा, परखा, मूल्यांकित किया जा सकता है।

देवराज (द्वै) की दृष्टि की व्यापकता एकतरफ जहाँ तेवरी के विधागत स्वरूप की सूक्ष्म विवेचना, दूरदर्शिता सार्थकता के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होती है वहीं – कहाँ गयी बुद्धिजीवियों की जमात' अथवा 'जुझारू मनुष्य की खोज' शीर्षक के अन्तर्गत बड़बोलेपन, बचकानी हरकतों के कारण अपरिपक्व चिन्तन का परिचय मिलता है।

मनुष्य का जुझारू व्यक्तित्व और संघर्ष की गाथा की अभिव्यक्ति का इतिहास अत्यन्त पुराना है। वह तेवरी आन्दोलन के साथ ही शुरू नहीं होता। अतः यह कहना भी अनुपयुक्त ही होगा कि तेवरी में जुझारू मनुष्य की खोज की गयी है। इसके साथ यह भी कहना कि 'तेवरी का गाया जाना उसकी अनिवार्य शर्त या विशेषता नहीं'' बेहद बेमानी महसूस होता है। क्योंकि खुद लेखक भी स्वीकारते हैं कि तेवरी मात्रिक और वर्णिक छन्दों में लिखी जाने वाली रचना है। तब तेवरी को उसके गेय-तत्व से कैसे काटा जा सकता है?

■

तेवरीपक्ष-10 पृ०-15

लोकतंत्र के हत्यारों के खिलाफ

दर्शन बेजार अब हिन्दी साहित्य में सम्मान के साथ पुकारे जाने वाला एक नाम है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम मे वे अपनी सशक्त और सार्थक रचना-धर्मिता का परिचय सुधी पाठकों को देते रहे हैं। उनका तेवरी विधा पर प्रथम स्वतंत्र तेवरी संग्रह 'एक प्रहार: लगातार' जब १९८५ में प्रकाशित हुआ, तो वे अपनी प्रहार और चुनौती से युक्त व्यंजनात्मक शैली के लिए पूरे भारतवर्ष में सराहे गये। इसे इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि उनकी इस राष्ट्रीय चिन्तनशीलता, जन सापेक्ष रचनार्धर्मिता को लोकतंत्र का ढोंग रचने वाली सत्ता की शक्तियों ने शक की निगाह से देखा।

लेकिन 'बेजार' लोकतन्त्र के हत्यारों के सामने आत्मसमर्पण करने वाला कोई कायर व्यक्तित्व नहीं ? वह आज भी अपने राष्ट्र के आकुल-व्याकुल मन को खुशहाली प्रदान करने के लिए साम्प्रदायिक, असामाजिक, बुर्जुआ और साम्राज्यवादी शक्तियों से [अभिव्यक्ति के स्तर पर] लगातार जूझ रहे हैं। इसी वर्ष उनका दूसरा तेवरी संग्रह 'देश खण्डित हो न जाये' प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत है 'तेवरी पक्ष' में उसकी प्रथम कड़ी——

तेवरीपक्ष-10 पृ०-16

Scanned by CamScanner

एक

आदमी की हर कहानी दुखभरी लिखनी पड़ी
बात कहनी थी अतः, खोटी-खरी लिखनी पड़ी।

पंचतारा होटलों की दावतें उनके कथन
किन्तु मुझको तो वतन की भुखमरी लिखनी पड़ी।

कल गया बाजार लेकिन, ला न पाया सब्जियाँ
तब मुझे घर की व्यवस्था अधमरी लिखनी पड़ी।

जब गजल से पोंछ पाया मैं न आँसू की व्यथा
तब मुझे 'बेजार' होकर तेवरी लिखनी पड़ी।

**

Scanned by CamScanner

दो

दीप बनकर तुम अँधेरा चीर दो
रोशनी की लिख नयी तहरीर दो।

है बहुत गहरी सियाही मुल्क में
दूर कर सबके हृदय से पीर दो।

मान्यताएँ अब न आगे कैद हों
रूढ़ियों की तोड़ हर जंजीर दो।

गुनगुना कर गीत सच्ची क्रांति के
अब बदल 'बेजार' की तकदीर दो।

**

तीन

जहाँ जहन में सिर्फ फसादी आलम हो
उस बस्ती में अमन कहाँ से कायम हो ?

लूटे थानेदार सड़क पर चोरों ने
लोगों के दिल की दहशत कैसे कम हो ?

काँटों में 'बेजार' बनाते राह वही
मरने-जीने का न कभी जिनको गम हो ?

आज जरूरत भगतसिंह की है फिर से
जो हाथों में लिये क्रान्ति का परचम हो ।

चार

भीड़ में गुमसुम खड़ा अब शान्त है
भाग्य में सच के लिखा एकान्त है।

देखने लायक थी हिम्मत कल तलक
पर बटोही आज कितना क्लान्त है ?

जो हमें तम में दिशा देता रहा
क्यों सितारा आज वह उद्भ्रान्त है ?

और साहस मूक कब तक यूँ रहे
धैर्य का इसने छुआ सीमान्त है।

अब पढ़ो 'बेजार' मन के पत्र को
क्रान्ति का इस पर लिखा वृत्तान्त है।

**

Scanned by CamScanner

पाँच

वक्त की जालिम सलाखों में बहुत कुढ़ते रहे
हम किसी जख्मी परिन्दे की तरह उड़ते रहे।

आस्थाएं ले चलीं जाने कहाँ, जाने किधर ?
सिलसिले बरबादियों के हर घड़ी जुड़ते रहे।

जिस तरफ तारीकियाँ, तनहाइयाँ थीं पेशतर
खुद ब खुद मेरे कदम उस राह क्यों मुड़ते रहे ?

जिंदगी के पेड़ ने कुछ प्यार के फल क्या दिये
हम घृणा के पत्थरों से उम्रभर तुड़ते रहे।

Scanned by CamScanner

छः

आस्था की देह में खंजर न गढ़ेगा
प्यार के अब गाल पर चाँटा न जड़ेगा।

दौर के मालिक जरा तू होश में आ जा
सुकरात का सच और अब सूली न चढ़ेगा।

आदर्श बनके छप रहे हैं झूठ आज जो
कल एक भी उन्हें न किताबों में पढ़ेगा।

आयी है अगर नाव जो बेवक्त भँवर में
'बेजार' लबे जाँ है पर तूफां से लड़ेगा।

**

Scanned by CamScanner

सात

घायल हुईं ऋचाएँ, जख्मी हैं आयतें
दीवार पर लिखी हैं लहू ने इबारतें।

अपने ही घर को आग लगाते रहे हैं हम
हमने ही लीं हैं मोल जमाने की आफतें।

पानी पे प्यार लिख दिया, बालू पे क्रान्तियाँ
हम मानते रहे कि हमने कीं बगावतें।

धोखा, फरेब, झूठ औ' मक्कारी बदचलन
हासिल हुई हैं हमको इसी में महारतें।

**

Scanned by CamScanner

आठ

रोज हम नींद से यूँ जागे हैं
अपनी पहचान छोड़ भागे हैं।

वक्त की अंधी दौड़ में यारो
लँगड़े-लूले ही आज आगे हैं।

हमने इन्सानियत के जहनों में
शब्द गोली से रोज दागे हैं।

खुद के साये से हमको दहशत है
हम हैं इन्सान, सो अभागे हैं।

आज तस्वीहे-मुल्को-मिल्लत के
हो गये तार-तार धागे हैं।

**

Scanned by CamScanner

नौ

जीत निश्चित है तुम्हारी तुम अभी हिम्मत न हारो
काँप सिंहासन उठेगा तुम तपस्या तो सँवारो।

वक्त के भागीरथो ! चट्टान की औक़ात क्या है ?
राह खुद देगा हिमालय, ठानकर गंगा उतारो।

कल नये युग का नया इतिहास तुम ही तो लिखोगी
मेरे मन की भावनाओ ! तुम जरा सोचो-विचारो।

हो बहुत 'बेजार' अर्जुन न्याय के कुरुक्षेत्र में अब
आ गया है वो समय तुम क्रान्ति की गीता उचारो।

**

दस

व्यर्थ है अभिव्यंजना सिंगार की
चाँदनी मेहमान है दिन चार की।

नायिका जो दिवस-भर भूखी रही
क्या करेगी अर्चना अभिसार की ?

रोटियाँ पहले मुहैया कीजिए
फिर गजल फरमाइएगा प्यार की।

'वक्त' का मुँह तोड़ने का वक्त है
धार पर चलते रहो तलवार की।

मिल गयी स्याही इसे आक्रोश की
अब कलम रँग लायेगी 'बेजार' की।

**

Scanned by CamScanner

ग्यारह

फूट के अब पाँव हम जमने न देंगे
एकता के वृक्ष को कटने न देंगे।

झूठ के हर हाथ में चिंगारियाँ हैं
किन्तु 'सच' का गाँव हम जलने न देंगे।

विप्लवों के रक्त से सींची जमीं पर
भीरुता को फूलने-फलने न देंगे।

व्याकरण जो गढ़ रहा है रोशनी का,
वह दिया 'बेजार' का बुझने न देंगे।

**

चौदह

यह कैसा उन्माद धर्म का ?
घर-घर वाद-विवाद धर्म का।

चारों ओर घृणा की आँधी
पनपा घोर विषाद धर्म का।

सबसे बड़ा धर्म मानवता
मर्म न हमको याद धर्म का।

अब तो नफरत की होली ने
जला दिया प्रह्लाद धर्म का।

दुराचार जब भी फूला है
उसे मिला है खाद धर्म का।

हम सुनने को तरस गये हैं
प्यार-भरा संवाद धर्म का।

✲✲

Scanned by CamScanner

पन्द्रह

खून इन्साँ का सड़क पर बह रहा है
धर्म की हिंसक कहानी कह रहा है।

रेत जैसी आस्थाओं पर खड़ा था
हर महल विश्वास का अब ढह रहा है।

अब परिन्दे किस जगह जा सिर छुपाएँ ?
आग में सारा चमन ही दह रहा है।

और कोई भी नहीं 'बेजार' है वह
हादिसे जो मुस्करा कर सह रहा है।

**

सोलह

लाश के ऊपर टिका जिसका तखत
क्या सुनेगी आह ऐसी सल्तनत ?

दौर खूँरेजी का है माना, मगर
नादिरी खंजर भी होंगे भूमिगत ।

दूर कोसों सत्य से वह आचरण
खून करना हो महज जिसकी सिफत ।

'सत्य' बनकर गर पुजा अब झूठ तो
करके मानेंगे उसे घोषित गलत ।

हम नहीं आदी रहे विद्वेष के
'प्रेम' को 'बेजार' ने पूजा फकत ।

**

तेवरीपक्ष-10

Scanned by CamScanner

वर्तमान स्थितियों में गोपियों का श्री कृष्ण को संदेश

"रपट लिखाते हम डरें, ऊधौ कहियो जाय,
थाने जाते हम डरें, ऊधौ कहियो जाय,।
रास रचाया श्याम ने, जमुना के वे तीर,
वहाँ नहाते हम डरें, ऊधौ कहियो जाय।,,

शतकों की परम्परा में (शीघ्र प्रकाश्य) अद्वितीय तेवरी-शतक

प्रेम न जाने श्याम

मूल्य—बीस रुपये, कवि—रमेशराज

विचारों के आधार पर रस-निष्पत्ति सम्बन्धी एक नितांत मौलिक कृति—

कविता क्या है ?

(शीघ्र प्रकाश्य)

लेखक—रमेशराज मूल्य-साठ रुपया

सार्थक-सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

तेवरी विधा के पाँच महत्वपूर्ण संग्रह

(१) अभी जुबाँ कटी नहीं सम्पादक—रमेशराज, मू०-पाँच रु०

(२) कबीर जिन्दा है सम्पादक—रमेशराज, मू०-दस रु०

(३) इतिहास घायल है सम्पादक—रमेशराज, मू०-पाँच रु०

(४) एक प्रहार : लगातार कवि—दर्शन बेजार, मू०-पाँच रु०

(५) देश खण्डित हो न जाए कवि—दर्शन बेजार, मू०-दस रु०

समकालीन विसंगतियों, विकृतियों का ऐतिहासिक दस्तावेज—

(शीघ्र प्रकाश्य कविता संग्रह)

दीदी तुम नदी हो

कवि—रमेशराज, मू०-बीस रुपये

प्राप्ति स्थल—सार्थक सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ़।

बुक-पोस्ट/मुद्रित सामग्री

सेवा में,

श्री...

....

....

संपादक/मुद्रक/प्रकाशक : रमेशराज द्वारा सार्थक सृजन प्रकाशन, ईसानगर अलीगढ़ के लिये शारदा प्रिंटर्स, 'राठी भवन' सासनी गेट, अलीगढ़ से मुद्रित।

Scanned by CamScanner